दुख का दरिया

वह मुझे उस फंक्शन में बिल्कुल सहज भाव से मिला था। अपनी जेब से एक कार्ड निकाल कर मेरे हाथ में पकड़ाते हुए बोला था, ''मेरे सात वर्षों के सहपाठी दोस्त, ऐसे तो कुछ एक मिनटों में मन नहीं भर पाएगा। फुर्सत के समय चले आना और अपने साथ अपनी शेरो-शायरी की किताब भी साथ लेते आना।''

''आज, किताब तो मेरे हाथ में है लेकिन एक घंटे से इस बैठक वाले कमरे में कैदी सा बना बैठा हूं।'' ये शब्द लिखकर फिर एक बार नौकर के हाथों सूरज को पर्चा भेजा था।

बस, जैसे चमत्कार हो गया और सूरज खुद चला आया बैठक वाले कमरे में। उसकी उंगली में पड़ी हुई बड़ी सी हीरे की अंगूठी पर जब सूर्य की किरणें पड़ीं तो पूरी बैठक जगमगा गई। अपनी बाहों में भरकर वह बोला, ''राम, तुम्हारी भाभी का दोष है। मुझे अगर तुम्हारे आने का पहले पता चलता तो तुम्हे यूं ही बाहों में समेटकर तुरंत अंदर ले जाता। तुम्हारे जैसे दिलदार का नाम याद आते ही यादों में डूब जाता हूं। लेकिन अब तो तुम्हारी भाभी ने आकर मुझे मेरे दोस्त से अलग कर दिया है। अब ऐसा करो, तुम अपनी भाभी के पास बैठो। मैं जरा अपने पार्टनर को एयरपोर्ट से लेकर आता हूं...।''

मैं अभी सूरज के प्रभाव से मुक्त ही नहीं हो पाया था कि नौकर ने मुझे ले जाकर सुनीता देवी के आगे खड़ा कर दिया। पता नहीं कैसे, 15 साल के लम्बे विवाहित जीवन ने सुनीता के चेहरे पर अपनी एक भी छाप नहीं छोड़ी थी? मैं जो हाथ जोड़े खड़ा था तो खड़ा ही रह गया। वह पहले तो मुझे देखती रही फिर हंसकर बोली, ''राम? इनके हैदराबाद वाले संगी! आओ, आओ बैठो'' और खुद आगे-आगे चलने लगी। मैं, जैसे किसी जादू के वशीभूत उसके पीछे-पीछे घिसटता गया। इतना ऐश्वर्य पूर्ण कमरा होगा, यह तो मैंने सपने में भी नहीं सोचा था! एयर कंडीशनर की हल्की सी बू पर कोई खुशबू फैली हुई थी। चंदन का एक छोटा और चौकोर तख्त कोने में रखा था। सुनीता ने मुझे उस पर बैठने का इशारा किया। पूरे कमरे में कहीं भी सिरहाने सहित सोफा या कुर्सी नजर नहीं आ रही थी फिर भी यह सुविधा मुझे दी गई थी। अब पता चला कि पूरे कमरे में जो चंदन की प्यारी सी खूशबू फैली हुई थी, वह इस तख्त से ही आ रही थी। सुनीता मेरे सामने एक मुड्डे पर बैठ गई। नौकर एक तिपाई पर ड्राई फ्रूट, बिस्किटऔर पानी

रख गया। वह एक गोल डिब्बा भी रख गया। सुनीता के शरीर पर कोई भी गहना नहीं था लेकिन जिस वक्त वह मुझे पिस्ते छील कर पकड़ाती जा रही थी उस वक्त मुझे ऐसा लगा जैसे सूरज की अंगूठी वाली सतरंगी आभा कमरे में फैल रही है। ''इतने सुंदर गुलाबी हाथ, कहीं किसी हीरे की खान से तो नहीं निकले हैं?'' मैंने तकल्लुफ छोड़कर सुनीता से सीधा सवाल किया।

वह हंसकर बोली, ''भई, आप शायर हैं, यह तो बोलेंगे ही। पहले यह बताइये आप हमारी शादी के समय हैदराबाद में ही थे फिर इतने बरस कहां गुम हो गए? कितने बच्चे हैं? दोस्त को चिट्ठी क्यों नहीं लिखते हो?''

''अरे-अरे, एक साथ इतने सवाल?'' खैर, यह तो था परिचय पुराने दोस्त की नई हालात से। लेकिन मुझे जो मेरी नलिनी ने सूरज के पास नौकरी प्राप्त करने के लिए भेजा था, वह बात ऐसे माहौल में कैसे कह सकता था? सबसे बड़ी बात तो यह थी कि इस सपने वाले महल में आकर मैं अपना सुदामापन भूल चुका था। काश, मुझे बंटवारे के समय कोई बताता कि फिर से बसने के लिए किसी बड़े शहर या राजधानी में ही ठिकाना ढूंढना चाहिए। लेकिन तब क्या मेरी शायरी जन्म ले पाती?

कुछ भी कहिए, मेरी यह मुलाकात बिल्कुल बेकार गई। नलिनी को जब मैंने सूरज और सुनीता के महल की बातें सुनाई तो मेरे सीने पर हाथ रखते हुए बोली, ''फिर वहां मत जाना। हम जोधपुर में ही ठीक हैं। हमें बम्बई वाला बनना ही नहीं है। अपने दोस्त को छोड़ जाएंगे पत्नी की अर्दली में? छी:छी:, अपने साथ आपको भी एयरपोर्ट ले जाता तो क्या हो जाता?''

इस ''क्या'' को मैं ही समझ रहा था, नलिनी को क्या समझाता? मुझे तो हाथ की अंगूठी और पैरों के जूते तक बेकार लग रहे थे। चेहरा तो मैंने आइने में नहीं देखा था पर हम दोनों दोस्त जो कभी सगे भाई समान लगा करते थे, वे शायद अब आपस में कुछ भी नहीं लग रहे थे। कहां वह चमकता आकाश, कहां मैं धरती की रेत! ...छी:छी:, ऐसा विचार और शायर के पास? शायर तो है तसव्वुर की दुनिया का सम्राट। खुदी को कर बुलंद इतना कि खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है?

कोरी बकवास, मेंढ़क के लिए कुएं के पानी में फूलकर फट जाने वाली शामत...। यह विचारों का बहाव सूरज के आदर सत्कार और सुनीता की नम्रता और सुंदरता, पता नहीं क्या-क्या चीजें थीं जो मुझे फिर से खींचती हुई उनकी दहलीज पर ले गईं। बाहर वाले कमरे तक पहुंचकर अचानक कदम वापस लौट चलने के लिए मजबूर करने लगे क्योंकि इन लोगों को कैसे बताता कि मैं मिलने के लिए नहीं आया हूं बल्कि नौकरी की गरज लेकर आया हूं। यह विचार आते ही पूरा शरीर पसीने से नहा उठा था।

''मालिक और मालकिन घर में नहीं हैं।'' नौकर की इस सूचना से मेरे मन में

शान्ति छा गई। अचानक घर के अन्दर से दो परियों सी बच्चियां निकल कर बाहर बगीचे में आईं और ड्राइवर–ड्राइवर चिल्लाती हुईं फिरोजी रंग की छोटी सी मोटर कार में बैठ गईं। ड्राईवर आया और, ''इन्हें डांस क्लास में ले जाना है ?'' बताकर गाड़ी उड़ा ले गया। हाय रे मैं ?....उनके पिता का खास दोस्त ? मुझ पर उनकी नजर ही नहीं पड़ी ? उस दिन सुनीता ने इनसे परिचय तो करवाया था लेकिन मैं ही शायद कोने में खड़ा था और याद आ गई मुझे अपनी बिटिया नंदिनी ! अरे, कितना बड़ा हो गया हूं मैं ? मेरी एक विवाह लायक बेटी भी है ? अभी कल ही की तो बात है, मैं और सूरज सवेरे–सवेरे शोर मचाते हुए नदी के किनारे पर आ जाते थे। सिर पर कोई जवाबदारी नहीं थी। अब तो जवाबदारियों के नीचे कंधे ही झुक गए हैं। एक–एक कदम उठा कर वापस जा रहा था कि अचानक बंगले में जैसे जान आ गई। ऐसा लगा जैसे मुर्झाया हुआ सूरजमुखी का फूल सूरज निकलने पर खिल उठा हो। सभी नौकरों को यहां–वहां, जल्दी–जल्दी भागते देखकर मैं भी रुक गया।

बात क्या थी ? इन सबको अपने साहब की मोटरकार का हार्न सुनाई दिया था जिसकी वजह से सब खड़े हो गए थे। मैं यह तब समझा जब फाटक में से मोटर को अंदर आते देखा। सूरज उतरा और उसके साथ एक क्रिश्चियन लड़की भी उतरी, जिसके हाथ में कई पैकेट थे। वैसे सूरज के हाथ भी खाली नहीं थे। एक–दो पैकेट उसके हाथ में भी थे। क्रिश्चियन लड़की ने उतरते ही थोड़ी दूर खड़े भोले को बुलाकर डिक्की में से व्हिस्की का कार्टून निकालने के लिए कहा और खुद बाहर के दरवाजे को चाबी से खोलने लगी। इसी बीच सूरज ने मुझसे हाथ मिलाया और मुझे खींचकर अंदर वाले हाल में ले आया जहां क्रिश्चियन लड़की रोजी गिलास में बर्फ और व्हिस्की डालकर मुंगफली, बादाम और चीज़ की प्लेट रख चुकी थी।

मैंने इधर–इधर देखकर पूछा, ''भाभी कहां है ?''

''होगी, यहीं कहीं।'' कहते हुए व्हिस्की का एक गिलास मूझे पकड़ाकर दूसरा खुद उठा कर वह पीने लगा। धीरे–धीरे पुरानी बातें याद करते–करते एक अजीब सी बात पर अटक गया...।

''यह तुम्हारी भाभी है न यहां आकर बहुत तेज हो गई है।''

''अच्छा!''

''हां भाई, बात ही मत पूछो। अब बेचारी रोजी उसे क्या तकलीफ देती है ? पति तो मैं उसका ही हूं! कोई मुझे उससे छीन नहीं सकता...।''

मेरी सांस अंदर ही अंदर रुकने लगी, ''तो यह है मेरा सूरज। क्या यह मेरा वही सूरज है ?''

सूरज पर नशा छाने लगा था। उसने कहा, ''आखिर इन लड़कियों को भी तो

रोजी रोटी चाहिए... ?''

''यानी ?..तुम्हारा मतबल है कि रोजी जैसी लड़कियों को... ?''

''हां, क्यों ठीक नहीं कहा ?...असल में क्या है कि सुनीता के पास कोई काम नहीं है। बेकार बैठकर दिमाग चलाती रहती है। फिर औलाद से भी कोई सुख नहीं मिला। बड़ी लड़की अभी अट्ठारह साल की नहीं हुई थी कि जिद्द करने लगी मुझे पारसी लड़के से शादी करनी है। मैंने तो कहा था, जहर देकर लड़की को मार दो। न होगा बांस, न बजेगी बांसूरी...।''

सूरज की बातें अब मेरी बर्दाश्त के बाहर होती जा रही थी। कानों में उंगलियां डालकर मैंने कहा, ''औलाद के लिए कोई पिता ऐसा भी बोल सकता है क्या ? ''

''अरे औलाद ? पता भी है कौनसे गुल खिलाती है औलाद ? शादी के 4 महीने बाद सीधी वापिस आकर यहां बैठ गई.... और उसकी मां ? अरे, बुझे हुए दीये की भी कोई बाती होती है, इस औरत की तो जड़ें तक जल चुकी हैं।''

सूरज की आंखों में दुःख समाता चला गया। ऐसा लग रहा था जैसे वह अभी रो देगा। उसी समय रोजी ने कहा, ''आपका दोस्त तो अभी तक आया नहीं है, फोन करूं?''

''नहीं, आज राम है न। सभी दोस्तों की कमी पूरी हो गई है।'' वह उठकर रोजी की कुर्सी के पीछे खड़ा हो गया, ''रोजी, तुम बिल्कुल ठीक हो न ?''

रोजी ने कहा, ''यस बॉस। ''

''नहीं, नहीं, नहीं, नहीं! अभी बॉस नहीं !'' सूरज के हाथ किसी तसव्वुर के गुब्बार मिटाने लगे। मैं अंदर तक कांप गया। सिगरेट का आखिरी टुकड़ा पांव से कुचलने को ही था कि दरवाजे पर किसी रोशनी का एहसास हुआ। सिर उठा कर देखा, सुनीता थी। सूरज की नजर भी उस तरफ गई। वह बोला, '' हैलो सुनीता, आज एक पैग बचा है बाकी...।''

सुनीता अंदर तो आ रही थी लेकिन लग रहा था जैसे इन सभी चीजों से, बल्कि लोगों तक से भी उसका कोई वास्ता नहीं था। मुझे ऐसा लग रहा था कि वह देवलोक से चली आ रही है और उसके पांव जमीन पर हैं ही नहीं। जैसे कोई अप्सरा तैरती हुई मुझ तक आ पहुंची और धीरे से बोली, ''आपका फोन आया है। आपको घर बुलाया है।''

मैंने घड़ी देखी, ''ओह इतना समय बीत गया।''

सूरज ने झूमते हुए कहा, ''बीत नहीं गया, उड़ गया बोलो दोस्त!'' मेरे मन ने बहुत बेतुकी बात बोली, ''वक्त तो सुनीता के साथ रहकर उड़ना चाहिए। रोजी के साथ रहकर वक्त उड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता।'' मैंने कुछ सोचकर अपने यहां आने के

कारण को याद करते हुए सूरज से कहा, ''अब तुम्हारा नम्बर है मेरे घर आने का। भाभी को भी साथ में लेकर आना।''

सूरज सोफे पर बैठ गया था। ''जरूर, जरूर !'' कहकर उसने उठने की कोशिश की लेकिन उठ नहीं पाया। ड्राईवर को परियों के साथ जाते हुए देखा था, मैंने। आखिर सुनीता ने अपनी कार निकाली, मुझे छोड़कर आने के लिए। सुनीता कार चला रही थी और मैं उसके पास बैठा हुआ था। एक पल के लिए ऐसा लगा कि हम दोनों घोड़े पर सवार होकर सरकारी बाग की सैर को जा रहे हैं और घोड़े की लगाम सुनीता के हाथ में है। मैं सिर्फ पीछे बैठा हुआ हूं...।

''वाह जमाना!'' मेरे मुंह से निकल गया।

''आपने कुछ कहा?'' सुनीता ने गाड़ी की स्पीड कम कर दी।

''नहीं...मेरा मतलब, कुछ नहीं?''

सुनीता ने हंसकर एक नजर मुझ पर डाली और फिर स्टेयरिंग पर ध्यान देकर स्पीड तेज कर दी। नारी की निगाहें, भावनाओं से भरी हुईं। तब दिल ने कहा कि सूरज से तो नहीं खुल सका, अगर नौकरी वाली बात सुनीता को बता दूं तो! शायद यहां आना सफल हो जाए...। मन को पक्का करके कहा, ''आप मुझे घर छोड़ने चल रही हैं, यह क्या...मेरी खुशनसीबी नहीं?''

सुनीता ने गाड़ी की रफ्तार धीमी कर ली। अपलक मेरी तरफ देखती हुई बोली, ''अचानक मैं, तुम से आप कैसे बन गई?.....हां, आपकी किस्मत अच्छी है, इस बात से मैं सहमत हूं।''

''मतलब?'' मैंने जल्दी से पूछा।

सुनीता हंसने लगी, ''मतलब तो आप ऐसे पूछ रहे हैं जैसे मैंने आपकी कोई चोरी पकड़ ली हो।''

''तो क्या नहीं पकड़ी आपने चोरी?'' मैंने स्वयं को तनाव मुक्त करके, पीठ कार की सीट से टिका ली।

सुनीता ने कार रास्ते में रोकी। एक ऐसी जगह जहां इसकी कार से किसी दूसरी कार का रास्ता ना रुके।

धीरे से उसने कहा, ''आप पूछेंगे नहीं कि कार क्यों रोकी? ''

''हां... बताओ?'' मैं असमंजस की स्थिति में था।

वह कुछ देर तक मेरी तरफ देखती रही, फिर अपने दोनों हाथों से रुमाल की तह जमाती हुई बोली, ''कल मैंने और सूरज ने बैठकर एक बात पर चर्चा की...।''

''कौनसी बात पर?'' मेरे मुंह से अचानक निकला।

''आप तो बच्चों की तरह चौंक जाते हो।''

मैं स्वयं पर कंट्रोल कर हंस दिया।

''सूरज और मैंने सोचा है कि अंधेरी में जो हम अपनी यूनिट, सूर्यधारा की एक नई आफिस खोल रहे हैं, उससे आपको बांधकर रख लें..।''

मैं हैरान होकर देखने लगा। मन में कहा, ''यही तो मैं आपसे मांगने आया था...।''

''नाम–मात्र के लिए उस ब्रांच की संचालक मैं कहलाऊंगी लेकिन लोगों पर नजर रखना व सारा काम सम्भालना आपके जिम्मे होगा...। दिल में कोई गलतफहमी मत लाईयेगा, मैं आपकी बॉस नहीं होऊंगी। मैं वही रहूंगी, आपके जिगरी दोस्त की पत्नी सुनीता, बस...।''

मैं जज्बाती हो उठा। मैंने उसके दोनों हाथ लेकर अपनी आंखों पर रखे। गाड़ी फिर से चलने लगी। मैं आंखें बंद करके उसके हाथों को अपनी आंखों पर रखने वाली घटना पर सोचने लगा। ठंडे नरम गुलाबी हाथ। मन में कहा, ''बिना कहे, मेरी हालत जानकर कितना सुख दिया है तुमने मुझे।''

''अब यहां से शायद दाहिनी ओर चलना है न?''

''हां, हां...।'' मैंने आंखें खोलकर देखा। दायीं तरफ ही चलना था, इस रोड पर पांचवां बंगला। और पल भर में कार मौसी के बंगले के अंदर पहुंच गई।

सुनीता को मैं जब घर के अंदर लेकर गया तो वह नलिनी से गले लगकर मिली।

''सूरज की पत्नी, सुनीता।'' मैंने नलिनी और मौसी से सुनीता का परिचय करवाया।

''आप क्या समझते हैं कि मैं नहीं पहचानती इनको?....वैसे कहीं और देखती तो शायद पूछती कि कहीं तुम, सुनीता और सूरज प्रकाश की बेटी तो नहीं हो?''

सब ठहाके लगाने लगे।

नलिनी ने कहा, ''देखभाल तो मैंने भी अपनी कम नहीं की है लेकिन तुम तो अपनी उमर से 10 साल छोटी लग रही हो।''

मौसी ने कहा, ''जीती रहो बेटी। इस नलिनी को तुम्हारी शादी में नहीं ला पाई थी। तुम्हारी शादी का कार्ड और एक लम्बी चिट्ठी मिली थी । फिर तो कई साल गुजर गए। मुम्बई में बसने के इरादे से आने के बाद से ही बोल रहे हैं कि हम यहां सूरज से मिलने आए हैं। इतने सालों के बाद सूरज की याद आई है इनको।''

मैंने मौसी से कहा, ''इतने सालों में सूरज कितना ऊंचा उठ गया है, कुछ पता भी है?''

''बेटा, फिर क्या सूरज नीचे ही खड़ा रहता?''

''शायरी में तो इन्होंने भी बहुत नाम कमाया है। सभी इनके गीतों और कलामों

को पहचानते हैं। लेकिन सुदामा तो सुदामा ही है।'' नलिनी का उदास फीका मुंह देखकर मैंने उसी समय उसके मुंह पर हाथ रख दिया...।

रात को जब नलिनी मेरे पास आकर लेटी तो पहला सवाल यही पूछा, ''तुमने सुदामा वाली बात पर मेरा मुंह क्यों बंद कर दिया था?''

मैंने हंसकर सीने से लगाते हुए उसके कान में कहा, ''नलिनी, इस दोस्त ने बिना कहे मेरे दिल की बात जान ली है...।''

नलिनी ने प्यार से पूछा, ''कुछ वेतन वगैरह की भी बात हुई?''

''नई आफिस का मैनेजर ही मुझे बना रहे हैं।''

सुख की सांस ली नलिनी ने, ''ओह, बिना रुपए—पैसे के बहुत परेशानी होती है। आज मौसी भी पूछ रही थी कि कितने दिन मुम्बई में रहने की सोचकर आए हो? बच्चे तो जोधपुर में अकेले हो गये होंगे?''

नई आफिस के मुहूर्त पर नलिनी ने एक शीशे की केबिन दिखाकर पूछा, ''क्या आप बैठेंगे इस केबिन में पूरी आफिस पर नजर रखने के लिए?''

''यह केबिन तो भाभी के लिए है। सूरज ने कहा है कि सुनीता सारा दिन घर में रहकर बोर होती है, फिर रात होते ही मुझसे लड़ती है। अच्छा है, एक ब्रांच सम्भालने का बोझ सिर पर होगा तो मुझे परेशान नहीं करेगी।''

''अच्छा?''

नलिनी की इसी 'अच्छा' में क्या-क्या समाया हुआ था, यह मेरा दिल अच्छी तरह से जानता था।

घर आने पर नलिनी मौसी को कहने लगी, ''देखो तो खोदा पहाड़, निकली चुहिया।''

मौसी ने जल्दी से पूछा, ''क्यों, नौकरी नहीं मिली क्या सुदामा को कृष्ण के यहां?''

मैंने हंसते हुए कहा, ''यह बात नहीं है, मौसी! नौकरी तो मिली, लेकिन मैनेजरी करनी पड़ेगी। वह भी सूरज की पत्नी की।''

मौसी एकदम सोफे पर बैठ गई। फिर कुछ सोचकर बोली, ''नौकरी किसी की भी करनी पड़े, तुम्हें इससे क्या मतलब? तनख्वाह तो मिलेगी न?''

''और भी बहुत कुछ मिलेगा, मौसी।'' हंसकर नलिनी बोली, ''एक गोरी लड़की होगी। इनकी केबिन में इनके सामने बैठी हुई। और ये बेचारे, शायरी करेंगे या मैनेजरी, पता नहीं। बस, महीने भर में आफिस हो जाएगा बंद...।'' नलिनी ने जोरदार ठहाका लगाया।

कितना शकी होता है नारी का मन...

मेरी आंखों में नींद नहीं थी। एक अजीब सन्नाटा छाया हुआ था, मन में। नलिनी ने रसोई का काम खत्म करने के बाद भी जब मुझे जगा हुआ देखा तो मेरी शायरी लिखने वाली डायरी मेरे हाथ पर रख दी।

''अरे, ये क्यों ?''

''आप, शेर लिखने के मूड में जो हैं।''

मैं शेर लिखने के मूड में था या नहीं यह अलग बात थी। वैसे मेरे दिमाग से सुनीता का हाथ अपनी आंखों पर रखने वाली घटना निकल ही नहीं पा रही थी।

अपना तकिया कंधों पर रख कर नलिनी ने मेरे पलंग के पास आकर लाईट का बटन बंद करना चाहा तो मैंने उसकी बांह खींचते हुए कहा, ''कहां जा रही हो ?''

''अरे बाबा, मौसी का घर इतना बड़ा है, किसी न किसी कमरे में सो जाऊंगी। लाईट में नींद कैसे आएगी मुझे ?''

नलिनी का हाथ चूमते हुए उसके पूरे वजूद पर नजर डालकर मैंने उसे जाने दिया। जोधपुर के छोटे से घर में जब रात भर शेर लिखने का मूड होता था तब नलिनी आंखें बंद करके भी जागती रहती थी। उसकी इस निस्वार्थ कुर्बानी के आगे मेरा मन झुक सा गया। उस समय जो शेर मैं लिख रहा था, उसमें नलिनी और सुनीता एक अजीब तरीके से नया आकार लेकर खड़ी हो गईं थीं।

सूर्यधारा इन्टरनेशनल का पूरा काम मुझे ही देखना था, लेकिन इससे पहले मुझे मेन ब्रांच से महीना भर काम सीखने में लग गया। आफिस से लौटते हुए सूरज अब रोजी और मुझे अपने साथ लेकर कभी पिक्चर तो कभी किसी क्लब में चलता था। थोड़े ही दिनों में, मैं समझ गया कि सूरज ने केवल सुनीता से दूर रहने और रोजी के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताने के लिए सूर्यधारा इन्टरनेशनल खोलने का नाटक रचा है। लेकिन दोस्ती के बीच में जो पैसों की दीवार थी तो दोस्त को कैसे समझाता ? कैसे, उसकी आंखें खोलता ? रोजी तो सिर्फ रुपयों की लालच में ही सूरज के साथ थी। अब मुझे सुनीता के लिए बहुत दुख हो रहा था। सूरज तो मेरा दोस्त है। मन ही मन मैं उससे शिकायत कर रहा था कि यार सच को छोड़ कर झूठ का दामन थाम रखा है तूने।

और एक दिन हकीकत सामने आ ही गई। रोजी ने सूरज से साफ-साफ कह दिया था कि तुमने मेरी कद्र नहीं की है। मैं विलायत में नौकरी करने जा रही हूं। सूरज ने मुझसे आकर कहा कि मैंने अपनी पत्नी से ज्यादा इसको घुमाया फिराया फिर भी...।

मुझे सुनीता का पक्ष लेने के लिए मौका मिल गया था। मैंने कहा, ''यही तो इन खरीदी हुई दासियों के नखरे हैं। इनका पेट भरता ही नहीं।''

सूरज ने कहा, ''बेवकूफ कहती है कि मेरी मम्मी को मकान लेकर दो। पूछो उससे, उसकी मां मेरी कौन लगती है... ?''

मैंने कहा, ''दोस्त! ये दाना भी फैंक कर देखो।''

मुझे पक्का यकीन था कि यह औरत, मकान मिलने के बाद सूरज का पीछा छोड़ देगी।

सूरज ने रोजी को मकान लेकर दिया या नहीं' इसका मुझे पता चलता उससे पहले ही मुझे सूर्यधारा इन्टरनेशनल की सुनीता वाली ब्रांच में जाना पड़ा।

सुनीता ने कहा, ''मैं यहां बोर हो रही थी।''

मैंने कहा, ''यहां तो काम इतना होगा कि बोर होने का टाईम ही नहीं मिलेगा तुम्हें।''

''न तो नये मैनेजर ने मुझे कोई काम सिखाया और न ही मेरा मन काम में लग रहा है। .... अब तो आपकी कम्पनी मिलेगी...।''

क्या किसी की कम्पनी के लिए भी कोई इतना परेशान होता है? क्यों है यह परेशानी... ?

बात बदलने के लिए मैंने हंसते हुए कहा, ''आपके माली ने किस बगीचे से यह फूल लाकर लगाए हैं? आपके गुलदस्ते से कितनी अच्छी खुशबू आ रही है। वैसे मुम्बई के गुलाब के फूल, हैदराबाद के फूलों की तरह खुशबूदार तो नहीं होते हैं।''

सुनीता धीरे से मुस्कराई। गुलदस्ते को देखते हुए बोली, ''यह है एवर रेड रोज, फोरेन वाला एक दोस्त देकर गया था।''

मैंने ध्यान से देखा, बिल्कुल असली दिखने वाले कोमल परिवार के कागज के गुलाब थे। और इस शीशे की केबिन के अंदर गुलाब की खुशबू फैली हुई थी। हैरानी वाली बात तो यह थी कि यहां भी नकली गुलाब रखे हुए थे और वहां सूरज के पास भी रोजी थी। सुनीता ने एक फाइल खोली और मेरे सामने रख दी। मैं, सूरज और उसके बारे में सोचता हुआ उसे ही देख रहा था। सुनीता ने आंख के इशारे से मुझे फाइल देखने को कहा।

अहा! यहां तो फाईल के ऊपर मेरा ताजा शेर लिखा हुआ था, 'कुमुदनी, तुम्हारे बड़े और गुलाबी हाथ...।' एक दबी हुई हंसी, ठहाका बनने के लिए चेहरे तक आई। लेकिन सामने वाली भी उस हंसी में शामिल होगी या नहीं यह जानने के लिये सुनीता की तरफ देखा। वह बिल्कुल शांत-गम्भीर थी। मेरी हंसी उड़ गई और उसकी जगह एक डर ने ले ली।

सुनीता ने कहा, ''तो इस उमर में आप किसी कुमुदनी को चाहने लगे हैं? नलिनी बेचारी तो ऐसे शेर देखकर दुखी होती होगी?''

मैंने गला साफ करते हुए कहा,''नलिनी तो शादी से पहले ही मेरी इस किस्म की शायरी को देखती आई है। कहती है, भगवान ने एक किस्म की मिट्टी से औरत को

बनाया और दूसरे किस्म की मिट्टी से मर्द को बनाया है। मैं उसी जवाबी मिट्टी से बना हुआ हूं, उसका एक हिस्सा...।''

अपने दोनों हाथ ठुड्डी के नीचे रखकर सुनीता सब सुन रही थी।

मैंने चुप्पी साध ली....एक पल के बाद मैंने कहा, ''कुछ तुम भी कहो न?''

लम्बी सांस छोड़कर सुनीता ने कहा, ''आपकी नलिनी का यह विचार बहुत अच्छा है..पूरी स्त्री-जाति के लिए अच्छा विचार है...लेकिन हालात, हर स्त्री के लिए अलग-अलग हैं। कुछ के लिए वह समय आता है जब पति-पत्नी एक दूसरे से अलग रहने लगते हैं। एक ही छत के नीचे रहते हुए भी एक दूसरे के दुख सुख को समझने के लिए तैयार नहीं होते। ऐसे समय में औरत के मन पर उदासी छा जाती है। सारे संसार की खुशियां उसे दुख का दरिया लगने लगती हैं.....और तब शायद काम ही उसका सहारा बन जाता है।''

मैं सुनीता के बर्फ से सफेद वजूद को देखता रह गया...अचानक इस मूर्ति पर छा गई मेरी नलिनी की सूरत। नलिनी के वजूद पर घर की देखभाल और रसोई के कामों ने एक काला परदा सा चढ़ा लिया है। लेकिन अंदर मचल रहे दुख के दरिया की बात तो उसने कभी भी नहीं कही।

हंसते हुए सुनीता ने टोका, ''अपनी नई खोज, कुमुदनी पर किताब लिखने लगे क्या?''

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। बस उस आकृति को देखने लगा जिसके हर हिस्से से जगमगाहट निकल रही थी, जैसे पानी के ऊपर सूरज चमक रहा था...मगर मन में था वही दुख का दरिया...।

कितनी देर तक सुनीता चुप बैठी रही। आखिर जैसे किसी धुएं को हाथ से हटाती हुई बोली, ''सामने देखो आपकी टेबिल पर कितने लोग इकटठे हो गए हैं।''

मैंने शीशे की केबिन से थोड़ी दूर रखी अपनी काम करने वाली टेबिल की तरफ देखा। वास्तव में वहां भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

सुनीता ने मेरी आंखों में देखते हुए कहा, ''आप सांता क्रूज ब्रांच से इस आफिस का काम सीखकर आए हैं। अब वह मुझे भी सिखा दीजिये तो यह भीड़ मेरी टेबिल पर भी आए...मैं काम में बिजी रहना चाहती हूं।''

मैं उसकी मोती जैसी आंखों में दुख के दरिया का नजारा देख रहा था। एक कविता की लाईन मन में आने लगी, 'कुमुदनी, तुम हो जल का भ्रम...।'

अनुवाद : गायत्री

□□□